[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3613

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

लोकोक्ति/मुहावरों में रंग भावों के संग

डॉ. सुषमा श्रीवास्तव, सहायक प्राध्यापक, हिंदी
शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इन्दौर

लोकोक्ति का सीधा संबंध जनसामान्य के अभिव्यक्ति पक्ष से है। लोकोक्ति की पृष्ठभूमि में मानव–जीवन के यथार्थ का अनुभव सन्निहित होता है। यह चिरंतन सत्य से संबंधित होती है। लोकोक्ति अपने आप में पूर्ण होती है। यह स्वतंत्र रूप से विषेष अर्थ को ध्वनित करती है। लोकोक्ति ओर मुहावरे भाषा के उत्कर्ष का विधान करते हैं। इनके प्रयोग से भाषा में सजीवता, सरसता, चित्रात्मकता व प्रभावोत्पादकता का समावेष होता है।'मुहावरा' षब्द अरबी भाषा से निकला है जिसका मूल अर्थ है 'अभ्यास' या 'बातचीत' किन्तु अब इस षब्द से एक विषेष अर्थ ध्वनित होता है। मुहावरों का प्रयोग वाक्य मे वाक्यांष के रूप में होता है। "लिखित अथवा काव्य भाषा में प्रचलित वह वाक्यांष जिसका अर्थ सामान्य अर्थ से विलक्षण होने के कारण लक्षणा अथवा व्यंजना द्वारा सिद्ध होता है उसे मुहावरा कहते हैं।" हम इसे लक्षणा प्रधान भाषा भी कह सकते हैं।

मानव जीवन में रंगों का एक विषिष्ट स्थान है। रंग हमारी स्वस्थ सांस्कृतिक परम्परा के द्योतक है। रंग विधान दर्षक की मानसिक स्थिति पर गहरा प्रभाव डालता है। जहाँ रूचि के रंग मानव को आनंद से भर देते हैं वहीं अप्रिय रंग उसके मानस पर विपरित प्रभाव डालते हैं।भाव एक गति है जो दर्षक के हृदय को आलोकित करने की क्षमता रखती है। भावों को मनोविकार भी कहा जाता है। किसी वस्तु को देखकर मन में किसी प्रकार की हलचल अथवा विकृति उत्पन्न होती है जिसके कारण हम उस वस्तु के प्रति आकृष्ट या विकृष्ट होते हैं, इसी प्रकार की जो मन की स्थितियाँ होती है वे भाव कही जाती हैं जैसे – प्रेम, घृणा, उदासीनता आदि। भावों का रस से घनिष्ठ संबंध है। षास्त्रों में स्थायी भावों से ही रसों की निष्पति मानी गई है। प्रेम, उत्साह, षोक, क्रोध, भय निर्वेद, घृणा, विस्मय व हास को स्थायी भाव मानकर नवरसों का विधान किया गया है। संचारी भावों की संख्या तैंतीस है किन्तु ये अधिक भी हो सकते हैं।

चित्रकला में रंगों का विषिष्ट महत्व होता है। लाल, पीला, नीला, सफेद एवं काला प्रधान रंग होते है तथा नीले तथा पीले रंग के मिश्रण से हरा रंग बनता है। यह मिश्रित रंग कहलाता है। रंगों का भावों को उभारने में महत्वपूर्ण स्थान होता है। जहाँ लाल रंग क्रोध, अनुराग, का प्रतीक है, वहीं पीला रंग प्रसन्नता व उत्साह का द्योतक है। नीला रंग गहनता व गंभीरता की अभिव्यक्ति करता है तो सफेद रंग षांति और समृद्धि से जुड़ा हुआ है। काला रंग उदासीनता, जड़ता व अवरोध को प्रकट करता हे तो हरे रंग से संपन्नता, समृद्धि व खुषहाली को व्यक्त किया जाता है।

चित्रकला में प्रयुक्त ये रंग मुहावरों/लोकोक्ति में भावों के साथ जुड़कर ही प्रकट होते हैं और विषिष्ट अर्थ का बोध कराते हैं। 'रंग' षब्द का प्रयोग भी मुहावरों में लाक्षणिक रूप से किया गया है। उदाहरणार्थ –

रंग चढ़ना	–	किसी वस्तु/व्यक्ति का खिलना
रंग फीका पड़ना	–	प्रभाव कम होना
रंग बदलना	–	व्यवहार बदलना/स्थिति में परिवर्तन होना
रंग लाना	–	प्रभाव या गुण दिखाना
रंग जमाना	–	प्रभाव डालना
रंग में ढलना	–	अनुकूल होना
रंग में रंगना	–	किसी से प्रभावित होना
रंग निखरना	–	सुंदरता प्रकट होना
रंग उड़ना	–	घबराहट होना
रंगरेलियां मनाना	–	विलासिता में डूबना
रंगा सियार	–	कपटी, धूर्त
रंगे हाथों पकड़े जाना	–	मौके पर ही पकड़ा जाना
हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा	–	बिना प्रयास किए सफलता मिलना
खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है	–	संगति का प्रभाव पड़ना
रंग कौए का नाम मेहताब कुंवर	–	नाम के अनुरूप गुण न होना
रंग में भंग में पड़ना	–	बाधा डालना

मुहावरे व लोकोक्ति अलग–अलग रंगों से भावयुक्त होकर लाक्षणिक अर्थ की प्रतीति कराते हैं –

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

लाल व पीला रंग –

गाल लाल होना	–	गुस्सा प्रकट होना
चेहरा लाल होना	–	षरमा जाना
शरीर लाल होना	–	स्वस्थ होना
लाल पीला होना	–	क्रोधित होना
शरीर पीला पड़ जाना	–	अत्यधिक दुर्बल होना
हाथ पीले करना	–	लड़की का विवाह करना

नीला रंग –

नील पड़ना	–	मार के दाग पड़ना
नील का टीका और कोढ़ का दाग	–	चरित्र पर लगा कलंक नहीं मिटता है
नीले आकाष से बिजली गिरना	–	अकस्मात बहुत बड़ी विपत्ति आ जाना

सफेद रंग –

सफेद झूठ	–	सरासर गलत/झूठ
चेहरा सफेद होना	–	सद्मा होना
धूप में बाल सफेद करना	–	अनुभव प्राप्त न करना

काला रंग –

काला मुँह होना	–	अपमानित होना
मुँह काला होना	–	कलंकित होना
दाल में काला होना	–	संदेहजनक बात होना
काला धन होना	–	चोरी से कमाया गया धन
काला बाजारी करना	–	गलत तरीके से व्यापार करना
दिल का काला	–	धूर्त/दूसरों का बुरा चाहने वाला
काले पानी भेजना	–	देष निकाले का दंड देना
कोयले की दलाली में हाथ काले होना	–	बुरे कार्य से बदनामी प्राप्त होना
काला अक्षर भैंस बराबर	–	अनपढ़ होना
झूठे का मुँह काला सच्चे का बोल बाला	–	अंत में सत्य बोलने वाले की विजय होती है।
काले का काटा पानी नहीं माँगता	–	कपटी आदमी के फेर में पड़ने पर व्यक्ति को भारी हानी उठानी पड़ती है।

हरा रंग –

हरी झण्डी दिखाना	–	आगे बढ़ने का संकेत करना
सावन सूखे न भादो हरा	–	सदा एक ही दषा में रहना
सावन के अंधे का सब हरा–हरा सूझता है	–	जो जैसा देखता है उसे सब वैसे ही दिखते हैं
हरे पेड़ पर सब बैठते हैं	–	सम्पन्न का सहारा हर कोई लेता है

इस प्रकार मुहावरे अथवा लोकोक्ति में 'रंग' षब्द का प्रयोग सौंदर्य, प्रभाव, व्यवहार, अनुकूलता, आनंद आदि भिन्न–भिन्न भाव प्रकट करने हेतु किया गया है। 'लाल' रंग, क्रोध, स्वस्थता व लज्जा को व्यक्त करता है। 'पीला' रंग दुर्बलता व विवाह का बोध कराता है। 'नीला' रंग चोट व कलंक के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है। 'सफेद' रंग झूठ, सद्मा व अनुभवहीनता की अभिव्यक्ति करता है। 'काला' रंग अपमान, कलंक, बदनामी, संदेह व चोरी आदि बुरे कार्य का सूचक है। 'हरा' रंग गतिषीलता, समृद्धि व सम्पन्नता का बोधक है।

अतः लोक ज्ञान के प्रभावषाली सूत्र कही जाने वाली लोकोक्ति एवं मुहावरों में रंगों के माध्यम से मनःस्थिति, विचार, भाव आदि का संकेत किया गया है। इनमें बिखरे रंग भाषा को सौंदर्य व चित्रात्मकता प्रदान करते हैं, इन्हें रंग–भाव संयोजन की सुंदर सृष्टि कहा जा सकता है।

संदर्भ :

1 *मुहावरे और लोकोक्तियाँ – प्रो. राजेष्वर प्रसाद चतुर्वेदी – उपकार प्रकाषन*
2 *साहित्यिक मुहावरा– लोकोक्ति कोष – हरिवंषराय षर्मा –राजपाल एंड संस, कष्मिरी गेट दिल्ली, 1981*
3 *रूपांकन – डॉ. गिर्राज किषोर अग्रवाल – ललित कला प्रकाषन, अलीगढ़ 2002*
4 *भारतीय चित्रकला का इतिहास – प्रेमचंद गोस्वामी – पंचषील प्रकाषन, जयपुर*